गांधीजी और स्वच्छता

बापू प्रत्येक सोमवार को 24 घंटे का मौन व्रत रखते थे. जब उन्हें किसी चीज की जरूरत होती या कुछ सूचना देनी होती, तो कागज के टुकड़े पर लिखकर ही बताते थे. लेकिन कागज का यह टुकड़ा भी नया अथवा कोरा नहीं होता था. बापू आए हुए पत्रों के पीछे, जिन पर कुछ लिखा हुआ न हो या लिफाफों को खोलकर उनके अंदर की ओर के बिना लिखे या बिना छपे वाले हिस्से पर लिखा करते थे.

बापू अपने पास दो रूमाल रखते थे. एक हाथ-मुंह पौंछने के लिए नौ इंच लंबा और छः इंच चौड़ा कपड़े का टुकड़ा और दूसरा उससे छोटे आकार का नाक साफ करने के लिए. बापू से किसी ने पूछा, ''बापू, आप मुंह पौंछने के लिए इतना छोटा कपड़ा क्यों रखते हैं?'' बापू ने फौरन जवाब देते हुए कहा, 'इससे काम चल जाता है, इसलिए जब इतने छोटे-से रूमाल से काम चल जाता है, तो बड़ा रूमाल क्यों इस्तेमाल करूं?'' हमने पूछा, ''तब फिर एक के बजाय आप दो रूमाल क्यों रखते हैं?''

हमारे सवाल का उत्तर देते हुए बापू ने कहा, ''छोटा रूमाल नाक साफ करने के लिए है. कभी छींक आती है, तो इसे नाक के सामने रख लेता हूं, जिससे दूसरों पर छींटें न पड़ें. फिर उसी से नाक साफ कर लेता हूं. नाक साफ किए हुए रूमाल से फिर मुंह साफ नहीं करना चाहिए. स्वच्छता की दृष्टि से यह अच्छा नहीं है.''

एक दिन बापू को खाना देते समय मुझसे चम्मच नीचे गिर गई. ''जाओ, इसे धोकर लाओ और फिर इस्तेमाल करो,'' बापू ने फौरन कहा.

मैं चम्मच धोकर लाई, चम्मच गीली थी, इसलिए मैं उसे पहने हुए अपने कपड़े से पोंछने लगी. यह देखते ही बापू ने कहा, ''अरे, यह क्या कर रही हो? धुले हुए चम्मच को अपने इस्तेमाल किए हुए कपड़े से पौंछने से तो वही बात हो गई, जिस कारण तुमको उसे धोने को भेजा था. यह चम्मच तो फिर गंदी हो गई. जाओ, फिर से धोकर लाओ.''

बापू, पाखाने से आज देर से बाहर निकले, इसलिए मैं घबरा गई और सहज ही पूछ लिया, ''बापू जी, आज आपको पाखाने में ज्यादा समय लगा. पेट में तकलीफ तो नहीं है न?''

''न, पेट में तो कोई तकलीफ नहीं है. मैंने भीतर जाते ही देखा कि मेरे से पहले जो भाई पाखाने गए थे, उनके पेट में तकलीफ होगी, इसलिए उनके मल के छींटे चारों ओर लगे हुए थे. सो मैंने प्रथम उसे अच्छी तरह से साफ किया और बाद में मैं बैठा. इसमें काफी देर लग गई.'' बापू ने कहा.

''पॉट आपने क्यों साफ किया? आप हमें बुला लेते, तो आपका समय बचता,'' मैंने कहा. ''तुम्हारी बात ठीक है. लेकिन पाखाने जाते समय मैंने जो अस्वच्छता देखी, उसको साफ करने के लिए किसी को भी बुलाना मेरे लिए शोभास्पद न होता. यह तो एक कारण है, तुम्हें न बुलाने का दूसरा कारण भी

है. पाखाना मैंने साफ कर लिया, इसलिए अब से एक ऐसा रिवाज हो जाएगा कि पाखाने का जो उपयोग करे, वह उसे साफ करके ही निकले. यह सूत्र कहने से या एक कागज पर लिखकर पाखाने में लटका देता, तो भी इसका कोई लाभ न होता. आज मैंने अपने हाथ से ही सफाई कर ली, यह बात वह भाई और पाखाने का इस्तेमाल करने वाले सब जान लेंगे, तो बिना कहे इस सूत्र का पालन करना भी शुरू हो जाएगा. तुम्हें साफ करने का एक ब्रश सिर्फ वहां लटका देना होगा. इस तरह, असल में मैंने अपना समय बचाया ही है, '' बापू ने विस्तर से समझाते हुए कहा.

बापू की बात सच हुई. बापू की सूचनानुसार वहां पर ब्रश लटका दिया गया. इसके बाद जो कोई उस पाखाने का उपयोग करता था, वह पाखाना अच्छी तरह से साफ करके ही निकलता था. फलतः तब से पाखाना हमेशा साफ-सुथरा और चमकता हुआ मिलता था.

बापू को सब काम साफ-सुथरा पसंद था. आश्रम में हम पाखाने में बाल्टी का उपयोग करते थे. रोज उसे पानी से साफ करके सूखने के लिए धूप में रख देते थे. आश्रम में नए आने वालों ने ये बाल्टियां अच्छी तरह से साफ की हैं या नहीं, इसे बापू स्वयं देखते थे. अच्छी तरह से साफ करने का अभ्यास हो जाने पर बापू रोज देखना बंद कर देते थे. शुरू-शुरू में हमें पता नहीं था कि बापू स्वच्छता के इतने आग्रही हैं. हमें यह मालूम था कि बापू की प्राणेन्द्रिय पूरा काम नहीं करती, सो उनको बदबू नहीं आएगी. फिर भी बापू शुरू-शुरू में कुछ-न-कुछ त्रुटि बताते ही रहते थे. 'इसमें से बदबू आएगी,' यह सुनकर हमें आश्चर्य होता था. बापू की इतनी सूक्ष्म दृष्टि देखकर एक बार हमने बापू से पूछा, ''आपकी प्राणेन्द्रिय तो काम नहीं करती, फिर भी आपको कैसे पता चल जाता है कि हमारे इस काम में बदबू आएगी?''

इसका जवाब देते हुए बापू ने कहा, ''तुम्हारी बात एकदम सही है. कुदरत का नियम है कि किसी व्यक्ति की एक इन्द्रिय पूरा काम न देती हो, तो उसकी दूसरी इन्द्रिय ज्यादा काम देती है. तुमने अंधे व्यक्ति देखे हैं? आंख न होते हुए भी, वे स्पर्श से बहुत कुछ बता सकते हैं. अपना रास्ता भी पहचान लेते हैं. वे धीरे-धीरे अपने रास्ते पर चलते जाते हैं. ईश्वर ने उनको आंखें नहीं दी हैं, इसलिए उनकी स्पर्श-शक्ति तेज कर दी है. मेरी भी ठीक वैसी ही स्थिति है. मेरी प्राणेन्द्रिय काम नहीं करती हैं, तो ईश्वर ने मेरी दृष्टि सूक्ष्म बना दी है. छोटी-से-छोटी त्रुटि भी मेरी दृष्टि से छूट नहीं सकती. इसी शक्ति से मैं सफाई के काम में त्रुटि देख सकता हूं और फिर अनुमान लगाता हूं कि इस त्रुटि से इतनी दुर्गन्ध फैलेगी. इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है. समझी?''

बापू ने विस्तार से यह कहकर हमारे प्रश्न का समाधान कर दिया.

बापू रात को सोने से पहले स्वयं अपना सारा दफ्तर अच्छी तरह से ठीक-ठाक करते थे. बापू अक्सर कहा भी करते थे, 'हमारे सारे काम इतने व्यवस्थित होने चाहिए कि कहीं कोई कसर न रहने पाए. हर चीज निश्चित स्थान पर रखनी चाहिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर अंधेरे में भी आसानी से मिल जाए. एक बार इस तरह हरेक कार्य करने का निश्चय कर लो, तो फिर कोई दिक्कत आएगी ही नहीं.'

एक दिन बापू की कुटिया में एक प्रवासी आए बापू से मिलने. बापू के नजदीक लकड़ी का एक बक्स था. इस पर खादी से बनाया हुआ सुंदर पिनकुशन रखा रहता था. आगन्तुक को यह बेहद पसंद आया. उन्हें कौतुहल हुआ. उन्होंने उसे उठाकर चारों ओर घुमाकर देखा. देखने के बाद उन्होंने वापस रख दिया. रख तो दिया, लेकिन स्थान बदल गया था. बापू ने यह देखा और उनको कुछ कहे बिना उनके सामने ही वह पिनकुशन उठाकर फिर अपनी ठीक जगह पर रख दिया. वहां उपस्थित सभी देखते ही रह गए.

यह पिनकुशन था, सूत कातते-कातते टूटे हुए धागे के टुकड़ों का. टूटे हुए धागे, डिजाइन वाली खादी के टुकड़े में रखकर सी लिए गए थे. देखने में बड़ा सुंदर था, इसीलिए उस आगन्तुक को पसंद आ गया था और वह उसे देखते रहे.

बापू सुबह-शाम घूमने बाहर जाते थे. रास्ते में चलते समय धूल तो उड़ती ही थी. लौटने के बाद गरम पानी से पैर धोकर ही वह अपनी जगह बैठते थे. सेवाग्राम से पांच-छः मील दूरी पर स्थित वर्धा मोटर में ही, जाते थे, फिर भी वह पैर रूमाल से पौंछकर ही अपनी जगह बैठते थे.

प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'बापू के साथ' से